तर्ज- दिल है कि। मानता नहीं

अंगना प्रीतम तेरी है तेरी
इश्क ईमान रहे,मेहर तेरी हो,चाहत यहीं है मेरी

1-हम तो ये जानें कोई नहीं अपना,प्रीतम तुमहो मेरे
इश्क हमारा हमको लौटा दो,अंगना ये विनती करे
इश्क पिला दो,आशिक बना दो,प्रीतम मेरे ओ धनी

2- इश्क के सागर मेहरबां तुम,चरणों में हम हैं तेरे
रूहें तो तेरे तन हैं पिया जी,जीवन तुम हो मेरे
जीव के जीवन,रूहों के खाविंद,प्रीतम मेरे ओ धनी

3-बल भी तुम्हारा बुध भी तुम्हारी,तेरे ही सुख में रहें
रूहें हैं तेरे इश्क की पाली,माशूक तुम हो मेरे
दिल में समाये,जाहिर ना पाये,दाझ मिटे न मेरी

Nijanand App